INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: VI(2nd lang.)	Department: Hindi	
Worksheet No: 9	**Topic: Paragraph Worksheet**	**Note: Pl. file in portfolio**

प्र 1 - निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए :-

नदी के किनारे पड़ा एक दूधिया पत्थर कहता है, "मुझे इतना गोल और चमकीला देखकर आप सोच रहे होंगे कि मैं इतना गोल और चमकीला कैसे हूँ ? क्या सभी पत्थर मेरे जैसे ही होते हैं ? नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है।" उसने आगे कहना शुरू किया , " पहले मैं एक बहुत बड़े पहाड़ का हिस्सा था। तेज़ वर्षा - तूफान ने मुझे अपने पिता से अलग कर दिया। अपने घर - परिवार से टूटने के बाद मैं बहुत दुखी हुआ।" उस समय मेरा शरीर टेढ़ा - मेढ़ा था । मेरे किनारे बहुत नुकीले और खुरदरे थे। मुझ पर किसी का भी ध्यान नहीं जाता था।

कुछ समय बाद एक आदमी आया। उसके पास एक बड़ी मशीन थी । उस मशीन की आवाज़ डरावनी थी और मैं उससे बहुत डर रहा था । मशीन ने बहुत सारी चट्टानों को तोड़ डाला था। मैं सोच रहा था मेरा अंत कैसा होगा ? मशीन का एक भाग एक पत्थर से टकरा कर खराब हो गया। उस मशीन को जब वापस ले जाया जा रहा था तो मुझे एक टक्कर लगी और मैं छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखर गया।

पत्थर कहता है - मैं कई महीनों तक ऐसे ही बिखरा पड़ा रहा । वहाँ लोग आते-जाते थे | जिसके दिल में आता वही मुझे ठोकर मार कर आगे बढ़ जाता। इसी तरह ठोकर खाते - खाते अपने भाग्य पर आँसू बहाते हुए मैं एक झरने में आ पड़ा । झरना मुझे अपने तेज़ बहाव के साथ खींचते - घसीटते ले गया और जाकर नदी में मिल गया ।

पहाड़ी नदी बहुत तेज़ गति से वह रही थी। उसका तेज़ बहाव मुझे बुरी तरह से रगड़ रहा था। उस रगड़ से मेरा पोर- पोर दुखने लगता । लेकिन कुछ ही दिनों में मुझे इसकी आदत हो गई। पत्थर कहता है - "मुझे मेरी तपस्या का यह फल मिला कि मैं चिकना और चमकदार हो गया था।" मैदान में पहुँचकर पहाड़ी नदी की शरारतें और उसकी चंचलता भी शांत हो गई थी । हाँ वह बिलकुल शांत हो चुकी थी। अब उसका बहाव मेरे शरीर को सहलाता था।

नदी तल में पड़े - पड़े कई जीवों के साथ मेरी दोस्ती भी हो गई थी। वे मुझे इधर-उधर लुढ़काकर खेलते । उनकी दुनिया बड़ी रोमांचक थी। एक दिन नदी के शांत वातावरण में एक उथल-पुथल हुई कि मैं कब किनारे पर आ गया मुझे पता ही नहीं चला। नदी के जल में स्वयं को देखकर मैं हैरान रह गया। जीवन के उतार-चढ़ाव में मेरा रूप इतना बदल गया था कि मैं अपने आप को ही पहचान न सका । लोग अब मुझे कंकड़ कहने लगे थे- एक गोल और चमकदार कंकड़ जिसे लोग हाथ में लेकर सहलाते , उसके ठंडे , चिकने रूप की प्रशंसा करते । मैंने इस रूप को प्राप्त करने के लिए कितनी मेहनत की है यह सिर्फ मैं ही जानता हूँ ।

प्रश्न - 1 - नदी के किनारे पड़ा एक दूधिया पत्थर क्या कहता है ?

उत्तर ----------

प्रश्न - 2 - पत्थर पहले किसका हिस्सा था ? किस ने उसे उसके पिता से अलग कर दिया ?

उत्तर ----------

प्रश्न- 3 - मशीन कैसी थी ? और उसने क्या किया था ?

उत्तर ----------

प्रश्न -4- पत्थर कब तक बिखरा पड़ा रहा ? वहाँ आते- जाते लोग क्या करते थे ?

उत्तर ----------

प्रश्न - 5 - झरने ने क्या किया था ?

उत्तर ----------

प्रश्न - 6 - पहाड़ी नदी की गति कैसी थी ? उसके बहाव के कारण क्या हुआ ?

उत्तर ----------

प्रश्न - 7 - तपस्या का फल किसे और क्या मिला था ?

उत्तर ----------

प्रश्न - 8 - मैदान में पहुँचकर पहाड़ी नदी में क्या बदलाव आया ?

उत्तर ----------

प्रश्न - 9 - नदी के जल में स्वयं को देखकर कंकड़ हैरान क्यों रह गया ?

उत्तर ----------

प्रश्न - 10 - लोग अब उसे क्या कहने लगे थे ?

उत्तर ----------

****